Volume 1; Issue 1;
Oct-Dec. 2024

E-ISSN: 3048-6742

Sanskriti-Samvahika

संस्कृति-संवाहिका

Peer Review Indexed Refreed Journal

Quarterly Journal

Editor-in-Chief

Dr. Ashwini Devi

Sanskriti-Samvahika संस्कृति-संवाहिका
E-ISSN: 3048-6742
https://sanskritisamvahika.in
Volume 1; Issue 1; Oct.-Dec. 2024; Page No. 1-7
Peer Review, Indexed and Refreed Journal

स्वामी दयानन्द सरस्वती के सामाजिक एवं शैक्षणिक विचारों का विश्लेषण

कमल मिश्र (शोधच्छात्र)
संस्कृत विभाग
जगत तारन गर्ल्स डिग्री कॉलेज
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

सारांशः *स्वामी दयानन्द सरस्वती आर्य समाज के संस्थापक और सत्य के अन्वेषक थे। उन्होंने भारत के गौरवपूर्ण अतीत को आलोकित किया और भारतवासियों को अपनी दीन–हीन अवस्था से ऊपर उठाकर भविष्य की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दी। बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी स्वामी दयानन्द सरस्वती समाज में वर्षों से व्याप्त अनेक कुरीतियों, रूढ़ियों और अन्धविश्वासों से समाज को उन्मुक्त करने की दिशा में जीवन पर्यन्त प्रयास करते रहे। उनके विचारों का प्रभाव हम 21वीं शताब्दी में भी देख रहे हैं। स्वामी जी ने समाज सुधार तथा अपने विचार को जन–जन तक पहुँचाने के लिये 1875 ई. में आर्यसमाज की स्थापना की। उनके शैक्षिक विचार वर्तमान में भी प्रासंगिक हैं। ब्राह्मण परिवार से होते हुये भी उन्होंने मूर्तिपूजा का विरोध किया और समाज के अन्धविश्वासी परम्परा का खण्डन किया तथा शाश्वत सत्य पर विश्वास रखने पर जोर दिया। उन्होंने सर्वशिक्षा की वकालत की और बच्चों को निःशुल्क शिक्षा देने की बात की, जिसका आधुनिक समाज भी अनुकरण कर रहा है, सरकारी विद्यालयों में निःशुल्क शिक्षा का विचार कदाचित् महर्षि दयानन्द के विचारों का ही प्रतिफल है। स्त्रियों के उत्थान में स्वामी ने बालविवाह, कन्यावध आदि का विरोध किया जो कि वर्तमान समाज में न के बराबर दिखाई पड़ता है।*

मुख्य शब्दः *स्वामी दयानन्द सरस्वती, सामाजिक, शैक्षणिक विचार*

स्वामी दयानन्द सरस्वती आर्य समाज के संस्थापक और सत्य के अन्वेषक थे। उन्होंने भारत के गौरवपूर्ण अतीत को आलोकित किया और भारतवासियों को अपनी दीन–हीन अवस्था

से ऊपर उठाकर भविष्य की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दी। स्वामी दयानन्द का जन्म 12 फरवरी 1824ई. में गुजरात के काठियावाड़ की मौरवी रियासत के अन्तर्गत टंकारा कस्बे में ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम करसन लाल जी तिवारी तथा माता का नाम अमृत बेन था। दयानन्द सरस्वती के बचपन का नाम मूलशंकर था। इनके पिता शैवमत के कट्टर अनुयायी थे और राज्य के तहसीलदार के पद पर रहते हुये भी इनका अधिकतम समय शिवजी की पूजा और उपासना में व्यतीत होता था। ब्राह्मण कुलोत्पन्न होने के कारण दयानन्द की शिक्षा में संस्कृत का ज्ञान था। अक्षरज्ञान से लेकर आठवें वर्ष में इन्हें उपनयनोपरान्त गायत्री मंत्रोपरीक्षा के साथ ही अल्पायु में ही यजुर्वेद संहिता कण्ठस्थ थी। इसके साथ ही इन्हें विभिन्न शास्त्रों के सूत्रादि का ज्ञान भी कराया गया था। सम्पूर्ण शिक्षाकार्य कुशल आचार्यों द्वारा घर पर ही सम्पन्न हुआ। स्वामी दयानन्द के शब्दों में– "चौदह वर्ष तक मैनें यजुर्वेद की संहिता कण्ठस्थ कर ली और कुछ वेदों का पाठ पूरा हो गया था और शब्दरूपावली आदि छोटे–छोटे व्याकरण के ग्रन्थ भी पढ़ लिए थे[1]।

धार्मिक परिवार में उत्पन्न होने के कारण इनका मूर्तिपूजा में सम्मिलित होना स्वाभाविक था किन्तु शीघ्र ही कुछ घटनाओं के फलस्वरूप उन्हें मूर्तिपूजा और धार्मिक कर्मकाण्ड के प्रति अविश्वास जागृत हो गया और अपनी बहन तथा चाचा की मृत्यु की घटनाओं से पीड़ित हो उन्होंने मुक्ति का मार्ग खोजने का निश्चय किया। 21 वर्ष की आयु में वैवाहिक जीवन के बन्धनों से बचने के लिए दयानन्द घर छोड़कर निकल गये तथा 1845 से 1860 ई. तक वे ज्ञान, प्रकाश एवं अमरत्व की खोज में घूमते रहे। 1860 ई. में उन्होंने स्वामी विरजानन्द की शिष्यता ग्रहण की।

1864 ई. में स्वामी दयानन्द ने सार्वजनिक रूप से उपदेश देना शुरू किया जो मृत्युपर्यन्त 1883 ई. तक चलता रहा। इस दौरान वे अथक परिश्रम करते हुये सम्पूर्ण भारत में घूमते रहे। वाद–विवाद तथा अपने विचारों का प्रचार–प्रसार करते हुए उन्होंने 1875 ई. में मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। स्वामी दयानन्द ने तत्कालीन हिन्दू समाज की दयनीय दशा, उनके नैतिक कायरता, वैचारिक पतन एवं सामाजिक अधोगति को महसूस किया तथा उन्होंने वैचारिक क्रान्ति के माध्यम से हिन्दू समाज को सुधारने, विदेशी तत्त्वों के आक्रमण से उसे बचाने और विभिन्न हिन्दू संगठनों के बीच सामंजस्य स्थापित करने का कार्य किया। अंग्रेजी शिक्षा तथा ईसाई मिशनिरियों के प्रभाव को कम करने के लिए उन्होंने हिन्दुओं को पुनर्संगठित कर हिन्दू धर्म की रक्षा करने का कार्य किया।

बौद्धिक प्रतिभा सम्पन्न एवं संस्कृत विद्वान स्वामी दयानन्द बड़े प्रभावशाली वक्ता थे। उन्होंने समकालीन लोगों, विद्वानों और देशी राजाओं पर गम्भीर प्रभाव डाला। उनके विचारों से प्रभावित होकर उदयपुर के महाराणा प्रताप उनके शिष्य बन गये तथा जोधपुर नरेश जसवंत सिंह ने उनसे मनुस्मृति को पढ़ा। स्वामी जी ने विभिन्न कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया तथा वैदिक धर्म को सत्य तथा

सार्वदेशिक बताया और उन्होंने "वेदों की ओर लौटो" का नारा दिया।

स्वामी दयानन्द के सामाजिक सुधार सम्बन्धी कार्य निम्न बिन्दुओं के रूप में देखा जा सकता है–

नारी शिक्षा पर विशेष बल

स्वामी दयानन्द ने नारी शिक्षा पर विशेष बल दिया। स्त्रीशिक्षा के विरोधियों को फटकारते हुए कहते हैं कि– "जो स्त्रियों के पढ़ने का निषेध करते हो, वह तुम्हारी मूर्खता, स्वार्थता और निर्बुद्धिता का प्रभाव है[2] । उनका मत था कि समाज के उत्थान में पुरुषों के समान ही नारियों का भी योगदान होना चाहिए। उन्होंने अनुभव किया कि भारतीय समाज में नारियों को पूर्णतः घर की चारदीवारों में हमेशा के लिये कैद कर दिया जाता था। उन्हें शिक्षा और स्वतन्त्रता के अवसर नहीं दिये जाते थे। इन सबसे छुटकारा प्राप्त कराने के लिये उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन नारियों के उत्थान के प्रति लगा दिया था। उन्होंने बहुविवाह, बालविवाह एवं पर्दाप्रथा का घोर विरोध किया तथा स्त्रियों को शिक्षित करने पर अत्यधिक बल दिया। स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्यसमाज के विभिन्न स्थानों पर कन्या विद्यालय तथा महाविद्यालय खोले गये। स्वामी जी ने भारतीय समाज में वर्षों से व्याप्त इस धारणा का घोर विरोध किया कि स्त्रियाँ पुरुषों से हींन है। उनका विचार था कि स्त्री पुरुषों के समान ही है। उन्हें भी यज्ञोपवीत तथा वेदों के अध्ययन का अधिकार है। **"ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्"[3]** इस वैदिक श्रुति का उद्धरण देते हुए वे सिद्ध करते हैं कि ब्रह्मचर्य लड़के के समान लड़कियाँ भी ब्रह्मचर्य का पालन करती हुई वेदादि शास्त्रों को पढ़कर पूर्ण विद्या को प्राप्त कर अपने सदृश पुरुष को प्राप्त होवें[4] ।

विधवा पुनर्विवाह का समर्थन

स्वामी दयानन्द ने समाज में व्याप्त विधवाओं के कष्ट का अनुभव करते हुए विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया है। इस समय समाज में विधवाओं की स्थिति दयनीय थी और उनका पुनर्विवाह करना समाज में पूर्णरूपेण निषिद्ध था। प्रायः भारतीय समाज में बालविवाह अधिक हुआ करते थे जिसके कारण कभी–कभी किसी दुर्घटना या महामारी से विवाह के कुछ समय पश्चात् ही पति की मृत्यु हो जाती थी जिसके फलस्वरूप उस नारी को सादा जीवन, चारदीवारी तथा लोगों का तिरस्कार और उपेक्षा से परिपूर्ण जीवन व्यतीत करना पड़ता था। अतः नारियों के उद्धार के लिये स्वामी दयानन्द ने विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया।

कन्या वध का विरोध

कन्याओं के प्रति भारतीय समाज का दृष्टिकोण सदा ही उपेक्षित रहा है। उस समय कुछ कुलीन लोग, राजा महाराजा तथा अन्य लोग कन्या जन्म को अपशकुन, खर्चयुक्त तथा अपनी इज्जत नीची करने का कारण मानते थे। इस कारण बहुत से लोग कन्या का वध भी कर देते थे। स्वामी जी ने कन्यावध का व्यापक विरोध किया। कन्यावध के विरोध के कारण ही राजस्थान के कोटा राजपूत की कन्यावध कुप्रथा

को रोक लगा और कानूनी रूप देकर इसे अपराध घोषित किया गया।

छुआछूत का विरोध

स्वामी दयानन्द ने तात्कालिक समाज में फैले छुआछूत का विरोध किया। उन्होंने अनुभव किया कि समाज के कुछ वर्ग ही शिक्षित हैं। शिक्षा के अभाव वाले लोगों के साथ ऊँच–नीच का भेदभाव किया जा रहा है। उनका मानना था समाज में सभी वर्ग एकसमान है और सबको एक दूसरे के साथ समानता का व्यवहार करना चाहिए।

अवकाश के सदुपयोग का समर्थन

स्वामी दयानन्द जी का मत था कि बच्चों को अवकाश का सदुपयोग करना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक माता–पिता का यह उद्देश्य होना चाहिए कि वे अपने बच्चों के अवकाश का सदुपयोग करना सिखाये जिससे बच्चें गलत मार्ग पर न जा सकें। उनका विचार था कि यदि अवकाश का सदुपयोग नहीं होगा तो बच्चें एकाकीपन महसूस करेंगे और गलत आदतों और संगति की ओर उन्मुख हो सकते हैं।

ब्रह्मचर्य पर विशेष बल

स्वामी दयानन्द का विचार था कि बच्चों को बाल्यकाल से ही ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। इसके साथ ही नियम और संयम के साथ शिक्षा अध्ययन करना चाहिए। ब्रह्मचर्य, नियम और संयम के माध्यम से ही बालक अपने लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर सकता है[5] ।

मूर्तिपूजा का विरोध

स्वामी दयानन्द की आस्था ईश्वर के अमूर्त स्वरूप में थी। उन्होंने मूर्तिपूजा का विरोध किया। मूर्तिपूजा को उन्होंने वेद–विरूद्ध और धर्म–विरूद्ध बतलाया। मूर्तिपूजा की निरर्थकता का प्रतिपादन करते हुए उनका कहना था कि सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान और समस्त जड़ चेतन की सृष्टि करने वाले ईश्वर के स्वरूप को एक मूर्ति तक सीमित मान लेना ईश्वर की सर्वव्यापकता को नकारने के समान है। अतः ईश्वर निराकार है। स्वामी दयानन्द जी हमारे भारतवासियों के साथ–साथ सम्पूर्ण मानव जाति का मन, वचन, कर्म व धर्म से उत्थान चाहते थे। उनका विचार था मन्दिर में धन–दौलत दान न करके समाज के गरीब कमजोर तथा जरूरतमन्द लोगों की मदद की जाय। उन्होंने भारतीय समाज के उत्थान के लिए जनसेवा पर अधिक बल दिया[6]।

वर्णव्यवस्था सम्बन्धी विचार

स्वामी दयानन्द ने जन्म आधारित वर्णव्यवस्था का विरोध करते हुए गुण और कर्म पर आधारित वर्णव्यवस्था का समर्थन किया। स्वामी जी का मत था कि जन्म से सभी समान होते हैं। गुण व कर्म के आधार पर वे उत्तम अथवा शूद्र होते हैं। जब वर्णव्यवस्था कर्म पर आधारित होगा तो सभी उन्नति की ओर अग्रसर होंगे।

आश्रमव्यवस्था का समर्थन

स्वामी जी ने वेदों द्वारा प्रतिपादित आश्रमव्यवस्था का समर्थन किया है। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास ये क्रमशः चारों आश्रम सभी व्यक्ति के सर्वांगीण विकास और श्रेष्ठ गुणों के विकास की दृष्टि से अत्यावश्यक हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के शैक्षणिक विचार

शैक्षिक सुधार के लिए स्वामी दयानन्द ने विभिन्न संस्कृत पाठशालाओं की स्थापना की। सर्वप्रथम इन्होंने काशी, काशगंज (जनपद एटा), छलेश्वर (अलीगढ़), फर्रूखाबाद तथा मिर्जापुर जिलों में ऐसी पाठशालाओं की स्थापना की जहाँ विद्यार्थियों को निःशुल्क भोजन, पुस्तकें और वस्त्रादि दिये जाते थे। इन पाठशालाओं की देखरेख स्वामी जी के सहयोगियों द्वारा की जाती थी[7] । स्वामी दयानन्द के शैक्षिक विचार संक्षेप में इस प्रकार हैं–

• स्वामी दयानन्द ने सार्वभौमिक शिक्षा का समर्थन किया। उनके अनुसार माता–पिता तथा राजा का आवश्यक कर्तव्य यह है कि सभी को अनिवार्य रूप से शिक्षित किया जाय, जिससे वे स्वयं वेदों का अध्ययन कर तदनुरूप आचरण कर सकें।

• स्वामी दयानन्द सरस्वती ने चरित्र निर्माण को शिक्षा का लक्ष्य तथा मुक्ति को जीवन का लक्ष्य बताया। मुक्ति से उनका आशय मुख्यतः पापपूर्ण आचरण से मुक्त होना है।

• प्रारम्भिक शिक्षा के विषय में स्वामी दयानन्द ने माता–पिता को प्रथम गुरु माना और कहा कि माता–पिता के उपदेश से बालक का सर्वाधिक लाभ होता है। अतः माता–पिता के आहार–विहार एवं विचार शुद्ध होने चाहिए।

•स्वामी दयानन्द ने बच्चों के नैतिक विकास के लिये षोडश संस्कारों के महत्त्व को स्वीकारा है। ये संस्कार बच्चों के लिये सर्वांगीण विकास हेतु अत्यावश्यक हैं।

• स्वामी दयानन्द का विचार था कि सभी वर्गों एवं जातियों को बिना किसी भेदभाव के समान शिक्षा का अवसर दिया जाना चाहिए और वेदाध्ययन का अधिकार सभी वर्गों को मिलना चाहिए।

• स्वामी दयानन्द का विचार था कि विद्यार्थी की अभिव्यक्ति का सर्वोत्तम माध्यम मातृभाषा में हो।

• स्वामी दयानन्द ने नारी शिक्षा पर उतना ही बल दिया जितना कि पुरुषों की शिक्षा पर।

• स्वामी दयानन्द का कहना था कि बच्चों के चरित्र निर्माण में समय व परिस्थिति के अनुसार सहानुभूति के साथ दण्ड भी आवश्यक है। पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रतिपादित खेल पद्धति द्वारा शिक्षा का उन्होंने विरोध किया है। उनके अनुसार शिक्षण जैसा गम्भीर कार्य खेल द्वारा सम्पन्न कराना गलत है।

• स्वामी दयानन्द सह शिक्षा के पक्ष में नहीं थे। उनका विचार था प्रत्येक समाज में छात्र–छात्राओं के लिए पृथक् शिक्षणालय होना चाहिए।

• स्वामी दयानन्द ने धर्म के रूढ़िवादी स्वरूप को त्यागकर परिष्कृत रूप में धार्मिक शिक्षा का समर्थन किया। वैदिक संस्कृति का समर्थन करते हुए वेदों की नई व्याख्या की तथा वेदों की शिक्षा के प्रचार एवं प्रसार के लिए विभिन्न गुरुकुलों की स्थापना की।

इस प्रकार बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी स्वामी दयानन्द सरस्वती समाज में वर्षों से व्याप्त अनेक कुरीतियों, रूढ़ियों और अन्धविश्वासों से समाज को उन्मुक्त करने की दिशा में जीवन पर्यन्त प्रयास करते रहे। उनके विचारों का प्रभाव हम 21वीं शताब्दी में भी देख रहे हैं। स्वामी जी ने समाज सुधार तथा अपने विचार को जन–जन तक पहुँचाने के लिये 1875 ई. में आर्यसमाज की स्थापना की। उनके शैक्षिक विचार वर्तमान में भी प्रासंगिक हैं। ब्राह्मण परिवार से होते हुये भी उन्होंने मूर्तिपूजा का विरोध किया और समाज के अन्धविश्वासी परम्परा का खण्डन किया तथा शाश्वत सत्य पर विश्वास रखने पर जोर दिया। उन्होंने सर्वशिक्षा की वकालत की और बच्चों को निःशुल्क शिक्षा देने की बात की, जिसका आधुनिक समाज भी अनुकरण कर रहा है, सरकारी विद्यालयों में निःशुल्क शिक्षा का विचार कदाचित् महर्षि दयानन्द के विचारों का ही प्रतिफल है। स्त्रियों के उत्थान में स्वामी ने बालविवाह, कन्यावध आदि का विरोध किया जो कि वर्तमान समाज में न के बराबर दिखाई पड़ता है। समाज सुधारक के रूप में स्वामी दयानन्द ने धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक सभी प्रकार से भारतीय समाज का गहन अध्ययन करते हुए अपने विचारों के माध्यम से भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की नींव तैयार की। दयानन्द जी ने ही सर्वप्रथम राष्ट्रीयता के लिये देशवासियों का आह्वान किया और भारतीयों के मस्तिष्कों में राष्ट्रीय और देशभक्ति के भावों का संचार किया। उन्होंने पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति की तुलना में भारतीय सभ्यता और संस्कृति को श्रेष्ठ सिद्ध किया। स्वामी जी के विचारों ने जैसा कि कर्नल ओलकोट ने लिखा है, "दयानन्द ने अपने अनुयायियों पर बड़ा भारी प्रभाव डाला।" महर्षि दयानन्द के विषय में इन्द्र विद्यावाचस्पति लिखते हैं–

"आपके व्याख्यानों का विषय धार्मिक होता था किन्तु आपकी दृष्टि में धर्म इतना विस्तृत था कि मनुष्य जीवन से सम्बन्धित रखने वाला शायद ही कोई ऐसा विषय हो जिस पर आप प्रकाश न डालते हों। आपका धर्म बड़ा विस्तृत था, वह केवल ईश्वर–पूजा तक परिमित नहीं था। धर्म एक था, व्यापी था, सर्वतोगामी था। परमात्मा और आत्मा पर गहरे विचार, विज्ञान की समस्याएँ, विवाह आदि सामाजिक प्रश्न, देश की दशा, राजा के कर्तव्य आदि सभी विषयों पर ऋषि दयानन्द अपनी सम्मति प्रकाशित किया करते थे[8] ।

सन्दर्भ सूची–

1 विष्णु प्रभाकर, स्वामी दयानन्द सरस्वती, पृ0 11–14

2 स्वामी दयानन्द, सत्यार्थ प्रकाश, पृ0 68

3 अथर्ववेद, 3/24/11/18

4 स्वामी दयानन्द, सत्यार्थ प्रकाश, पृ0 68

5 स्वामी दयानन्द, सत्यार्थ प्रकाश, पृ0 46–50

6 स्वामी दयानन्द, सत्यार्थ प्रकाश, पृ0 50–52

7 रविंदर कुमार, आधुनिक भारत का सामाजिक इतिहास, पृ0 99–100

8 इन्द्र विद्यावाचस्पति, आर्यसमाज का इतिहास, प्रथम भाग, पृ0 111–112

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1– पुरुषोत्तम नागर, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2018

2– स्वामी दयानन्द, सत्यार्थप्रकाशः, मधुर प्रकाशन, दिल्ली

3– वैद्यनाथ वर्मा, विश्व के महान शिक्षाशास्त्री, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 2012

4– एन0 आर0 स्वरूप सक्सेना एवं संजय कुमार, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, आर लाल बुक डीपो, 2021

5– डॉ0 वीरेन्द्र पाण्डेय, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, 2015

6– डॉ0 एस पी गुप्ता एवं डॉ0 अलका गुप्ता, भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2022

7– रमन बिहारी लाल, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ

8– डॉ0 के0 के0 मिश्र, आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन, मीनाक्षी प्रकाशन, बेगम ब्रिज, मेरठ

9– विष्णु प्रभाकर, स्वामी दयानन्द सरस्वती, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2002

10– इन्द्र विद्यावाचस्पति, आर्यसमाज का इतिहास, प्रथम भाग, वैदिक प्रकाशन, 2019